NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL
PASCHIM VIHAR-63
113TH
EDITION
KNOWLEDGE
THY
WEALTH
JULY -
SEPTEMBER
2022
SPECTRUM

SPECTRUM

Of the Neonians!
By the Neonians!
For the Neonians!

Mother Teresa once said, "Peace begins with a smile".

Smiling is powerful. It can change millions of lives for the better. It is a way of showing your happiness, love, friendliness, appreciation and kindness to others. It instantly puts a person in good mood and is infectious to everyone around them. It reminds us that, despite the fast pace of life, we must always remember to be happy and appreciate the little things in life. Smiling helps us to overcome times of fear, anxiety, and nervousness.

TEACHER FACILITATORS

Mr. Jagmohan Sharma, Ms. Kanchan Bhagat
Ms. Santosh, Ms. Surbhi Hajela,
Ms. Geetika, Mr. Mayank Grover

Dear readers, wish you a very Happy Diwali

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL (BATCH- 2021- 22)
QUALIFIED NEET EXAM- 2022
ARYAN GUPTA
QUALIFIED JEE (MAINS)
&
QUALIFIED JEE (ADVANCED)
YEAR- 2022
VANSHIKA AHLUWALIA
YASHIKA SHARMA
KRISHNA PRATAP SINGH
ANAND SINGH
YUKTA DASS
GAUTAM THUKRAL
NEO- FAMILY
Proudly Congratulates you

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL
PASCHIM VIHAR-63
NOTHING SUCCEEDS LIKE SUCCESS
The Saga of Success Continues.... 2021-22
(CLASS- X) CONGRATULATIONS !!!
CHANDEEP SINGH
1ST POSITION
97.6%
NAYAN GHOSH
2ND POSITION
96.8%
SIMONDEEP KAUR
3RD POSITION
96.4%

MERIT HOLDERS OF 2021-22
100 % MARKS IN
SCIENCE AND SOCIAL SCIENCE

CHANDEEP SINGH
CLASS-X- 100% MARKS IN SCIENCE

Chandeep Singh is a sincere, obedient and a focussed student who has full potential to achieve excellence in all fields. Chandeep Singh has always been keenly interested and has shown active participation. His brilliant performance in Science has set an example for his juniors to follow.

Sub. Teacher- Mrs. Divya Mishra

HARNEK SINGH
CLASS-X- 100% MARKS IN SOCIAL SCIENCE

Harnek's enthusiasm for learning and consistency in efforts are the reasons for his excellent result in Class X- Social Science Board Examination. He has been a diligent and an obedient student. I am overwhelmed with his outstanding performance and wish him the best of luck for the future ahead.

Sub. Teacher- Ms. Mitali Kharbanda

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL
PASCHIM VIHAR-63
TOPPERS OF CLASS- XII (SCIENCE STREAM)
The Saga of Success Continues.... 2021-22
CONGRATULATIONS !!!
ARYAN GUPTA
1ST POSITION
95%
AARAV GARG
2ND POSITION
94%
KESHAV KANSAL
3RD POSITION
92.2%

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL
PASCHIM VIHAR-63
TOPPERS OF CLASS XII (COMMERCE STREAM)
The Saga of Success Continues.... 2021-22
CONGRATULATIONS !!!
JANVI ARORA
1ST POSITION
97.2%
MADHAV LUTHRA
2ND POSITION
96.4%
BHAVJOT SINGH
3RD POSITION
95%

CBSE RESULT CLASS- X- 2021-22 (90% and ABOVE)
CHANDEEP SINGH
I- POSITION (97.6%)
NAYAN GHOSH
II- POSITION (96.8%)
SIMONDEEP KAUR
III- POSITION (96.4%)
HARNEK SINGH
IV- POSITION (94.6%)
SAKSHAM ARORA
V- POSITION (94.2%)
LAKSH GULATI
V- POSITION (94.2%)
HARSHAL
VI- POSITION (94%)
YASH THAKUR
VII- POSITION (93.8%)
MADHVI BAJPAI
VIII- POSITION (93.2%)
SARIKA
VIII- POSITION (93.2%)
RAMANDEEP SINGH
IX- POSITION (92.8%)
JACELYN KAUR
X- POSITION (92.2%)
YASH ARORA
X- POSITION (92.2%)
JAGRIT JAGGI
XI- POSITION (91.8%)
MAHEEP ARORA
XII- POSITION (91.6%)
APRA DWIVEDI
XIII-POSITION(91.4%)
BHOOMI BEDI
XIII-POSITION(91.4%)
CHAVI SINGH
XIII-POSITION(91.4%)
MANYA VASHISTH
XIV-POSITION(90.6%)
MAULI BUDHIRAJA
XV-POSITION(90.6%)
HARSH SHARMA
XV- POSITION(90.6%)
DIYA KHURANA
XVI- POSITION(90.4%)
VIRAJ MEHTA
XVI- POSITION(90.4%)

CBSE RESULT CLASS- XII 2021-22 (90% and ABOVE)
SCIENCE STREAM
ARYAN GUPTA
I- POSITION (95%)
AARAV
II- POSITION (94%)
KESHAV KANSAL
III- POSITION (92.2%)
CHINMAY SINGH
IV- POSITION (92%)
YUKTA DASS
V- POSITION (91.6%)
AYUSH RAI
VI- POSITION (91.4%)
ISHWARDEEP SINGH
VII- POSITION (91.2%)
GURJOT SINGH
VIII- POSITION (90.6%)
COMMERCE STREAM
JANVI ARORA
I- POSITION (97.2%)
MADHAV LUTHRA
II- POSITION (96.4%)
BHAVJOT SINGH
III- POSITION (95%)
PRAVAV BHASIN
IV- POSITION (94.8%)
RANMEET SINGH
IV- POSITION (94.8%)
DEVANSH BHATNAGAR
V- POSITION (92%)
LAKSHAY GUPTA
VI- POSITION (91.6%)
JAPNEET KAUR
VII- POSITION (90.6%)

NEO CLUBS

READERS' HIVE CLUB

DRAMATICS CLUB

SCIENCE CLUB

COMMERCE CLUB

COMPUTER CLUB

SPIC AND SPAN CLUB

ENVIRONMENTAL CLUB

NEONIANS' FLAG RALLY

अंतद्र्वंद्व

आज भी मैं जब उस मोड़ से गुजरती हूँ , जहाँ मेरा विद्यालय स्थित है, रूक जाती हूँ। ऐसा लगता है कि जैसे समय रूक सा गया हो। वहाँ खड़ी मैं सोचती कि यदि मैं अपने आप को संभाल लेती , यदि दिल और दिमाग में चल रही जंग को मैं जीत जाती तो आज ऐसी असफल सी न बैठी होती। याद आते हैं वो दिन जब ये दुनिया आकर्षक लगती थी मुझे, जब ये जीवन सरल एवं आसान लगता था मुझे, परंतु अब वैसा नहीं रहा।

कहीं सातवीं कक्षा में थी जब मैंने पहली बार दोस्तों का एक बड़ा समूह बनाया। सभी सज्जन मित्र पाकर मैं फूली न समाती थी, हम सब में जो बातचीत होती वह भी अच्छी ही चलती परंतु मैंने उन सब से घुलने–मिलने के प्रयत्न में खुद को खो दिया। कभी सोचती थी कि क्या ये मैं ही हूँ? वैसी ही हूँ जैसी होती थी या बदल चुकी हूँ? कोई मुझसे नाराज़ हो जाता तो सोचती, "क्या ये मेरी ही गलती थी?" लेकिन अगले ही पल खयाल बदल जाते और मुझ पर इसका प्रभाव न पड़ने देने की जद्दोजहद शुरू हो जाती। दिन साधारण थे और दिल खुशनुमा। कुछ दो साल बाद हम नौवीं कक्षा में अच्छे अंकों से पास होकर अगली कक्षा में पहुँचे। यहीं से सब बिगड़ना आरंभ हुआ। वो अनमोल पल अब व्यर्थ बन गए और दोस्त दुश्मन में तबदील हो गए। पढ़ाई का बोझ बढ़ चुका था जिस कारण हम विद्यालय के बाहर मिल नहीं पाते थे। मुझे अपने दोस्तों से दूरी महसूस होने लगी। इस दूरी को मिटाने के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार थी। परीक्षाएँ समाप्त होने के बाद हम बाहर घूमने गए जब मैंने अपने कुछ मित्रों को धूम्रपान करते पकड़ लिया तो उनको सुधरने का सुझाव और उनके माता–पिता को बता देने की धमकी दे मैं घर चली गई। जहाँ एक ओर मुझे घिन्न आ रही थी, वहीं दूसरी तरफ़ वह दुनिया फूलों सी लग रही थी क्योंकि मेरे सभी मित्र उस जीवन की ओर आकर्षित थे। इस गहरी दोस्ती को तोड़ने की हिम्मत मुझमें न थी। अगले दिन विद्यालय में मित्रों के बीच सामूहिक दबाव और दोस्ती टूट जाने के डर में मैंने भी धूम्रपान करना शुरू कर दिया और तबसे मैं डर–डर के रहने लगी। सिर पर तलवार सी लटकती थी कि पकड़ी न जाऊँ और मेरा डर एक दिन सच हो गया। मेरी बड़ी बहन ने मुझे धूम्रपान करते पकड़ लिया और यह लत न छोड़ने पर माता–पिता को बता देने की धमकी मुझे दी। मैं फिर मन–ही–मन आने वाले खतरों के बारे में सोचने लगी। मैं अपने माता–पिता से बहुत डरती थी लेकिन इस आदत को छोड़ पाना भी कठिन था। इस कहानी में एक नया मोड़ तब आया जब विद्यालय के बाहर अध्यापिका ने हमें धूम्रपान करते पकड़ लिया और हमें विद्यालय से कुछ दिन के लिए निलंबित कर दिया गया और माता–पिता को भी इस बात का बोध हो गया। कुछ समय बाद परीक्षा हुई तो अंक भी अच्छे नहीं आए और तब से जीवन में असफलता के सिवाए कुछ हासिल नहीं कर पा रही थी। अब मेरी स्थिति बेहतर हो गई है, इस नशे के अंधेरे से मैं बाहर आ गई हूँ परंतु जिंदगी की जंग मैं हार गई, सफल न हो पाई। कभी मैं एक प्रतिभाशाली छात्रा थी परंतु मेरी एक आदत, दोस्तों की बुरी संगत ने मुझे जीवन में बहुत पीछे छोड़ दिया। मैं आज फिर से अपने उस जीवन को पाने की कोशिश में लगी हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं इसमें सफल हो जाऊँगी।

शिक्षा– अंतद्र्वंद्व की स्थिति से उभर पाना सफलता के लिए आवश्यक है।

जसलीन कौर, दसवीं 'स' –स्वरचित कहानी

HAPPY INDEPENDENCE DAY
HAPPY
INDEPENDENCE
DAY

भगवान विष्णु जी के दस अवतार

भगवान विष्णु जी के दस अवतारों में से हमने पिछले अध्याय में उनके दो अवतारों के बारे में पढ़ा था।

आज हम भगवान श्रीहरि के **तृतीय** अवतार के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

तृतीय अवतार – वराह अवतार

एक समय की बात है। ब्रह्मा जी के मानसपुत्र सनकादि ऋषिगण भगवद्दर्शन की लालसा लिए बैकुण्ठ धाम में जा पहुँचे। वहाँ द्वार पर उन्हें हाथ में गदा लिए दो समान आयु के देवश्रेष्ठ दिखाई दिए। वे दोनों **भगवान के पार्षद जय और विजय** थे। जय-विजय सनकादि का मार्ग रोककर खड़े हो गए। यह देखकर सनकादि क्रुद्ध हो गए और उन दोनों द्वारपालों को श्राप देते हुए कहा –" तुम भगवान बैकुण्ठ नाथ के पार्षद हो, किन्तु तुम्हारी बुद्धि अत्यंत मंद है। तुम अपनी भेदबुद्धि के दोष से इस बैकुण्ठ लोक से निकलकर उन पाप योनियों में जाओ जहाँ काम, क्रोध और लोभ रहते हैं। "सनकादि के श्राप से व्याकुल होकर जय-विजय उनके चरणों में लोटकर क्षमा प्रार्थना करने लगे।

इधर जैसे ही श्री भगवान पद्मनाभ को विदित हुआ कि उनके पार्षदों ने सनकादि का अनादर किया है, वे तुरंत लक्ष्मी सहित वहाँ पहुँच गए। भगवान को स्वयं वहाँ देखकर सनकादि की विचित्र दशा हो गयी। वे तुरंत भगवान को प्रणाम करके उनकी स्तुति करने लगे। तब भगवान सनकादि की प्रशंसा करते हुए बोले – " ये जय-विजय मेरे पार्षद हैं। इन्होने आपका अपमान किया है। आपने इन्हें दंड देकर उचित ही किया है। ब्राह्मण मेरे परम आराध्य हैं। मेरे अनुचरों के द्वारा आप लोगों का जो अनादर हुआ है, उसे मैं अपने द्वारा ही किया हुआ मानता हूँ। मैं आप लोगों से प्रसन्नता की भिक्षा मांगता हूँ। "सनकादि ने प्रभु की अर्थपूर्ण और गंभीर वाणी सुनकर उनका गुणगान करते हुए कहा -" हे लक्ष्मीपति, आप सत्वगुण की खान और सभी जीवों के कल्याण के लिए सदा उत्सुक रहते हैं। हमने क्रोधवश इन्हें शाप दे दिया, इसके लिए हमें ही दण्डित करें, हमें सहर्ष स्वीकार है।"

दयामय प्रभु ने सनकादि से अत्यंत स्नेहपूर्वक कहा – " आप सत्य समझिये, आपका यह शाप मेरी ही प्रेरणा से हुआ है। ये दैत्य योनि में जन्म तो लेंगे, पर क्रोधावेश से बढ़ी हुई एकाग्रता के कारण शीघ्र ही मेरे पास लौट आएंगे। "सनकादि ऋषियों ने प्रभु की अमृतवाणी से प्रसन्न होकर उनकी परिक्रमा की और वहाँ से प्रस्थान कर गए।

सनकादि के जाने के बाद प्रभु ने जय-विजय से कहा – " तुम लोग निर्भय होकर जाओ। तुम्हारा कल्याण होगा। मैं सर्वसमर्थ होकर भी ब्रह्मतेज की रक्षा चाहता हूँ, यही मुझे अभीष्ट है। दैत्ययोनि में मेरे प्रति अत्यधिक क्रोध के कारण तुम्हारी जो एकाग्रता होगी, उससे तुम इस श्राप से मुक्त होकर कुछ ही समय में मेरे पास लौट आओगे। " लीलामय प्रभु की लीला का रहस्य देवताओं और ऋषियों को भी समझ में नहीं आता तो मनुष्यों की तो बात ही क्या।

प्रभु की इसी लीला के फलस्वरूप तपस्वी **कश्यप मुनि** जब सूर्यास्त के समय संध्या पूजन में लगे थे उसी समय उनकी पत्नी **दक्षपुत्री दिति** उनके समीप पहुँचकर संतान प्राप्त करने की कामना व्यक्त करने लगी। महर्षि कश्यप ने उनकी इच्छापूर्ति का आश्वासन देते हुए असमय की ओर संकेत किया पर दिति के हठ के आगे उनकी एक न चली। बाद में महर्षि कश्यप ने दिति देवी से कहा – " तुमने चतुर्विध अपराध किया है। एक तो कामासक्त होने के कारण तुम्हारा चित्त मलिन था, दूसरे वह असमय था, तीसरे तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है और चौथे तुमने **रूद्र** आदि देवताओं का अनादर किया है।इस कारण तुम्हारे गर्भ से दो

अत्यंत अधम और क्रूरकर्मा पुत्र उत्पन्न होंगे। उनके कुकर्मों एवं अत्याचारों से महात्मा पुरुष क्षुब्ध और धरती व्याकुल हो जाएगी। वे इतने पराक्रमी और तेजस्वी होंगे की उनका वध करने के लिए स्वयं नारायण दो अलग अलग अवतार ग्रहण करेंगे। "दिति देवी कश्यप मुनि की बात सुनकर चिंतित हो गयी पर उन्हें इस बात का संतोष था कि उनके पुत्रों की मृत्यु स्वयं नारायण के हाथों होगी, जिससे उनका कल्याण हो जायेगा।

समय आने पर दिति ने दो जुड़वाँ पुत्र उत्पन्न किये। उन दैत्यों के धरती पर पैर रखते ही पृथ्वी, आकाश और स्वर्ग में अनेकों उपद्रव होने लगे। वे दोनों दैत्य जन्म लेते ही पर्वताकार और परम पराक्रमी हो गए। प्रजापति कश्यप ने बड़े पुत्र का नाम '**हिरण्यकश्यप**' और छोटे का नाम '**हिरण्याक्ष**' रखा। दोनों भाइयों में बड़ी प्रीति थी। दोनों एक दूसरे को अपने प्राणो से भी अधिक प्रेम करते थे। दोनों ही महाबलशाली, अमित पराक्रमी और आत्मबल संपन्न थे। दोनों भाइयों ने युद्ध में देवताओं को पराजित करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। एक बार हिरण्याक्ष ने सोचा – 'मृत्युलोक में रहने वाले पुरुष पृथ्वी पर रहकर यज्ञ पूजन आदि करेंगे जिससे देवताओं का बल और तेज बढ़ जायेगा।'

यह सोचकर उसने पृथ्वी को **रसातल** में ले जाकर छिपा दिया। यह देखकर सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी बहुत दुखी हुए और भगवान श्रीहरि का ध्यान किया। अंतर्यामी भगवान श्रीविष्णु की स्मृति होते ही ब्रह्मा जी के नासिका से अंगूठे के बराबर एक **श्वेत वराह शिशु** निकला। विधाता उसकी ओर आश्चर्य से देख ही रहे थे कि वह तत्काल विशाल हाथी के बराबर हो गया और फिर देखते देखते पर्वताकार हो गया। उन यज्ञमूर्ति वराह भगवान का गर्जन चारों तरफ गूंजने लगा। वे घुरघुराते हुए और गरजते हुए मदमस्त हाथी के समान लीला करने लगे। उस समय मुनिगण प्रभु की प्रसन्नता के लिए उनकी स्तुति कर रहे थे।

भगवान स्वयं यज्ञपुरुष हैं तथापि सूकर रूप धारण करने के कारण अपनी नाक से सूंघ कर पृथ्वी का पता लगा रहे थे। उनकी दाढ़े बड़ी कठोर थीं और त्वचा पर कड़े कड़े बाल थे। इस प्रकार वे बड़े क्रूर जान पड़ते थे पर अपनी स्तुति करने वाले मुनियों की ओर बड़ी सौम्य दृष्टि से निहारते हुए उन्होंने जल में प्रवेश किया। **भगवान वराह** बड़े वेग से जल को चीरते हुए रसातल में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने पृथ्वी को देखा और अपने दाढ़ों से पृथ्वी को उठाकर रसातल से बाहर निकले।जल से बाहर निकलकर वे पृथ्वी को निर्दिष्ट स्थान पर स्थापित कर ही रहे थे कि हिरण्याक्ष वहाँ पहुँच गया। उसने वराह भगवान को युद्ध की चुनौती दी। इसके बाद हिरण्याक्ष और वराह भगवान के बीच भयंकर संग्राम हुआ। इस युद्ध में वराह भगवान ने खेल खेल में ही हिरण्याक्ष का वध कर दिया। इसके साथ ही देवतागण वराह भगवान की स्तुति करने लगे। फिर प्रभु ने वैष्णवों के हित के लिए **कोकामुख तीर्थ** में वराहरूप का त्याग किया।

****

AZADI KA AMRIT MAHOTSAV
HAR GHAR TIRANGA
HISTORY
OF
INDIAN NATIONAL FLAG

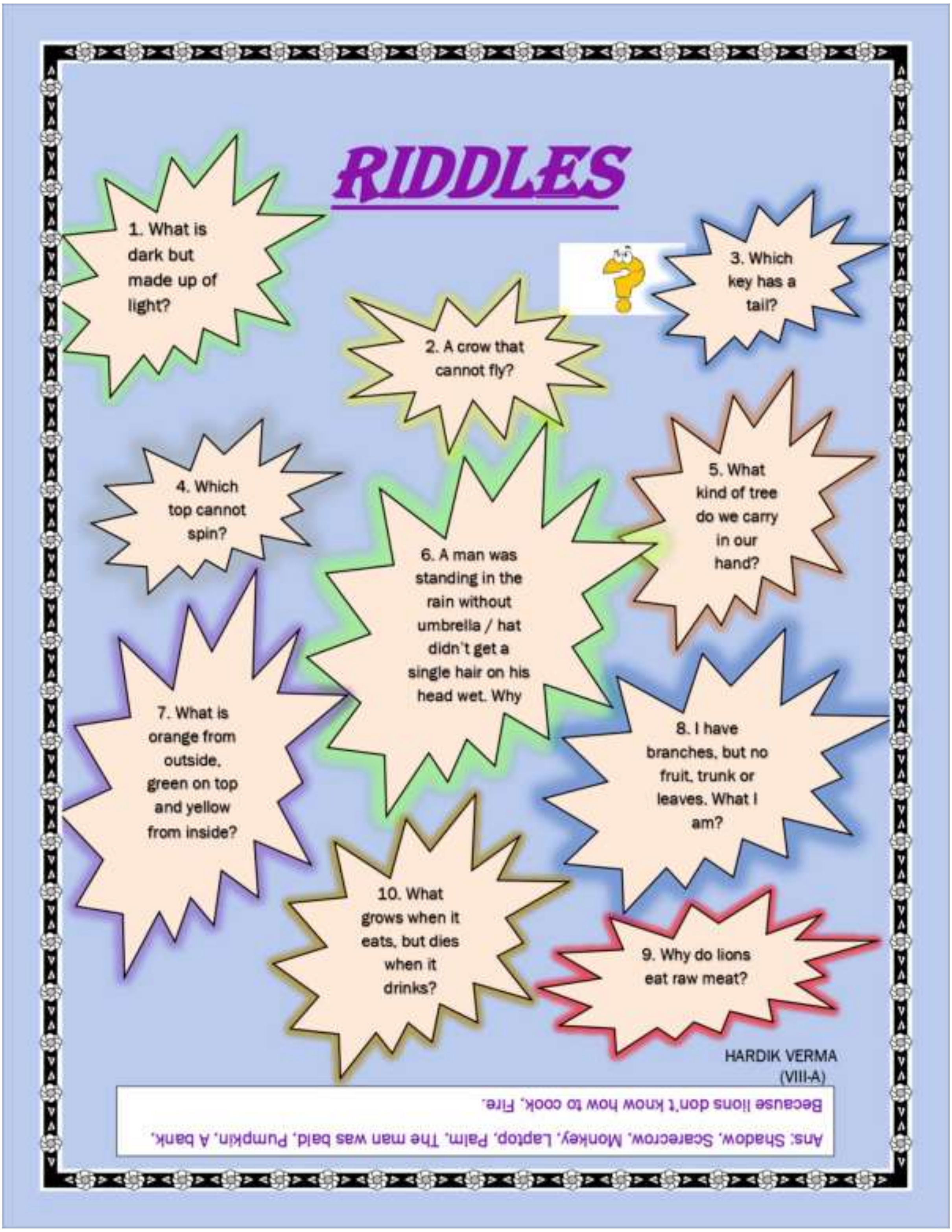
RIDDLES
1. What is dark but made up of light?
2. A crow that cannot fly?
3. Which key has a tail?
4. Which top cannot spin?
5. What kind of tree do we carry in our hand?
6. A man was standing in the rain without umbrella / hat didn't get a single hair on his head wet. Why
7. What is orange from outside, green on top and yellow from inside?
8. I have branches, but no fruit, trunk or leaves. What I am?
9. Why do lions eat raw meat?
10. What grows when it eats, but dies when it drinks?
HARDIK VERMA
(VIII-A)
Ans: Shadow, Scarecrow, Monkey, Laptop, Palm, The man was bald, Pumpkin, A bank,
Because lions don't know how to cook, Fire.

WORKSHOPS ATTENDED BY TEACHERS
MRS. NEERAJ SINGH
Learning Outcomes and Pedagogies
MRS. PRATIBHA MADAN
Life Skills
MRS. KOMAL SHARMA
Art Integration
MRS. PRIYANKA
Happy Classroom
MRS. BALWINDER KAUR
Capacity Building Programme
MR. MAYANK GROVER
Cyber Ethics
MRS. GEETIKA MANCHANDA
Inclusive Education
MRS. TEENA
Integration of the Arts in Curriculum

TREE PLANTATION DRIVE

PRIMARY SCHOOL ACTIVITIES

TEACHERS' DAY
YAMAHA

भारतीय वायुसेना दिवस–8 अक्टूबर

"नभः स्पृशं दीप्तम्" – भारतीय वायुसेना का यह 'आदर्श वाक्य' भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय से लिया गया है, जो महाभारत के युद्ध के समय भगवान कृष्ण के द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश का एक अंश है, जिसका अर्थ है, "गर्व के साथ आकाश को छूना"

भारतीय वायुसेना प्रत्येक वर्ष इस दिवस को मनाने के लिए गुप्त एयरबेस पर भारत के सबसे अच्छे विमान और सबसे पुराने विमानों के साथ वायुसेना के जवानों की सहायता से हैरत अंगेज करतब दिखाती हैं। इस दिन को भारतीय वायुसेना के शौर्य के रूप में भी देखा जाता है।

भारतीय वायुसेना दिवस प्रतिवर्ष 8 अक्टूबर को मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1932 में की गई थी। जब हमारा देश आज़ाद नहीं हुआ था तब भारतीय वायुसेना को 'रॉयल इंडियन एयर फोर्स' के नाम से जाना जाता था, लेकिन देश के आज़ाद होने के बाद 1950 में 'रॉयल' शब्द को हटा दिया गया और तत्पश्चात हमारी आकाशीय सेना को भारतीय वायु सेना के नाम से जाना जाने लगा। भारतीय वायुसेना ने आज संपूर्ण विश्व में अपना लोहा मनवा लिया है। भारतीय वायुसेना ने देश को दुश्मनों से बचाने के साथ-साथ अनेक प्रकार के राहत कार्यों और पड़ोसी देशों की सहायता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज़ादी के बाद से ही पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के साथ चार युद्ध और चीन के साथ एक युद्ध में अपना योगदान दे चुकी है। अब तक हमारे वायु सैन्य बल ने कई बड़े अभियानों को अंजाम दिया है जिनमें ऑपरेशन विजय-गोवा का अधिग्रहण, ऑपरेशन मेघदूत-सियाचीन ग्लेशियर , ऑपरेशन कैक्टस-मालदीव तख्तापलट, ऑपरेशन पुमलाई शामिल है। इन ऑपरेशन के अलावा भारतीय वायुसेना संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति मिशन का भी सक्रिय हिस्सा रही हैं। भारतीय वायुसेना का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय हवाई क्षेत्र की रक्षा करना, सशस्त्र बलों की अन्य शाखाओं के साथ मिलकर भारतीय क्षेत्रों एवं राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करना है। वायु सेना युद्ध के मैदान में सैना के सैनिकों को हवाई समर्थन तथा रणनीतिक एयरलिफ्ट की क्षमता प्रदान करना है। यह सेना अंतरिक्ष कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'भारतीस अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान' के साथ मिलकर अंतरिक्ष आधारित संपत्तियों के प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए भी उत्तरदायी है।

भारतीय वायु सेना सशस्त्र बलों की अन्य शाखाओं के साथ-साथ आपदा राहत कार्यों में प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री गिराने, खोज एवं बचाव अभियानों, आपदा क्षेत्रों में नागरिक निकासी उपक्रम में सहायता प्रदान करता है। भारतीय वायुसेना ने 2004 में सुनामी तथा 1998 में गुजरात चक्रवात के दौरान प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए राहत ऑपरेशनों के रूप में व्यापक सहायता प्रदान की है। भारतीय होने के नाते हमारा ये कर्तव्य है कि हम अपनी सेना के शौर्य दिवस के बारे में जाने एवं दिल से अपनी सुरक्षा के लिए तत्पर सेना के जवानों के लिए हमेशा आभारी रहें।